पाठ 3 **जनवरी 13-19**

परमेश्वर या धन संपत्ति?

सब्त अपराह्न **जनवरी 13**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें: भजन० 33:6-9; मत्ती 19:16-22; 1पत० 1:18; इब्रा० 2:14-15; निर्ग० 9:14; भजन० 50:10.

याद वचन: *"इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है" (फिलिप्पियों 2:9-11)।*

परमेश्वर रुपये और भौतिक चीजों के प्रति अत्यधिक जुनून के अपने दृष्टि का वर्णन करने में अधिक शब्दों को बर्बाद नहीं करता। लालची धनवान व्यक्ति के लिये मसीह के वचन जो, परमेश्वर के द्वारा ही आशीषित हुआ, उसके पास जो भी था, संचय करता रहा, परमेश्वर का भय हम में होना चाहिए: "परन्तु परमेश्वर ने उस से कहा; हे मूर्ख इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा: तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है, वह किसका होगा? ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिये धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं" (लूका 12:20-21)।

परमेश्वर की सेवा और रुपये की सेवा परस्पर अनन्य कार्य हैं। यह एक या अन्य, परमेश्वर या धन संपत्ति है। यह सोचना कोरी कल्पना है हम दोनों रास्तों को ले सकते हैं, क्योंकि दोहरा जीवन जीना कभी न कभी हमें पकड़ लेगा। हम दूसरों को या स्वयं ही को मूर्ख बना सकते हैं लेकिन परमेश्वर को नहीं, जिसके प्रति एक दिन हमें लेखा देना होगा।

हमें चुनाव करना है, हम जितना हिचकिचाते हैं, बहाने बनाते हैं या विलंब करते हैं, शक्ति के साथ रुपये और रुपये का प्रेम हमारे आत्मा पर बल लगाता है। विश्वास निर्णय की मांग करता है।

जो हमारे निर्णय को सहज बनाता है वह है उस पर केंद्रित करना कि परमेश्वर कौन है, उसने हमारे लिये क्या किया है, और हम उसके प्रति क्या ऋणी होते हैं।

---

* सब्त जनवरी 20 की तैयारी के लिए इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

रविवार **जनवरी 14**

मसीह, सृष्टिकर्ता

पढ़ें उत्पत्ति 1: 1; भजन० 33: 6-9; यशायाह 45: 11,12; यिर्मयाह 51: 15; एवं यूहन्ना 1: 3. भौतिक जगतकी अच्छाई के विषय में ये पदस्थल हमें क्या बतलाते हैं?

"यह मसीह था जिसने आकाश को फैलाया, और पृथ्वी की नींव डाली। यह उसका हाथ था जिसने क्षितिज में संसार को लटकाया, मैदान के फूलों को आकृति दी। 'अपनी सामर्थ्य से पर्वतों को स्थिर करता है।' 'समुद्र उसका है, और उसी ने उसको बनाया।' भजन० 65: 6; 95: 5। यह वह था जिसने पृथ्वी को सुन्दरता से भर दिया, और हवा, और आकाश, उसने पिता के प्रेम का संवाद लिख दिया।"– एलेन जी०ह्वाईट, द डिजायर ऑफ एजेस, पेज 20।

भौतिक चीजों में स्वयं में कोई बुराई नहीं है। कुछ धर्मों से भिन्न जो सिखलाते हैं कि भौतिक संसार और वस्तुएँ स्वयं बुरे या हानिकर हैं और इसलिये केवल आत्मिक चीजें अच्छी हैं बाईबल भौतिक संसार को महत्व देती है।

आखिरकार, यीशु ने स्वयं इसकी सृष्टि की। कैसे, तब, यह बुरी हो सकती है? दुर्भाग्यवश, जैसा परमेश्वर के वरदानों के साथ होता है, इसे विकृत किया जा सकता है और बुराई के निमित्त व्यवहार किया जा सकता है, परन्तु मूल वरदान को वह बुरा नहीं बना सकता। बाईबल चीजों के दुर्व्यवहार एवं विकृति के विरुद्ध चेतावनी देती है जिसकी परमेश्वर ने इस संसार में सृष्टि की है, परन्तु स्वयं चीजों के विरुद्ध नहीं। बल्कि परमेश्वर ने भौतिक संसार की सृष्टि की, और वह अपने लोगों से चाहता है कि इस संसार के लाभों का और फल का आनन्द लें: "और जितने अच्छे पदार्थ तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे और तेरे घराने को दे, उसके कारण तू लेवियों और अपने मध्य में रहने वाले परदेशियों सहित आनन्द करना" (व्यवस्था वि० 26: 11; इसे भी देखें व्यवस्था वि० 14: 26)।

यीशु सृष्टिकर्ता है (यूहन्ना 1: 1-3), और पृथ्वी मात्र एक नमूना है जिसे उसने बनाया है। उसकी सृजनात्मक क्षमता उसे स्वयं जीवन में एक अनोखा दृष्टिकोण देता है और जो इस पर वास करते हैं। वह भौतिक चीजों का मोल जानता है, और जानता है कि उसने उन्हें हमारे लाभ के लिये और आनन्द करने के लिये दिया। वह यह भी जानता है कि जब मनुष्य उन वरदानों का दुरुपयोग करता है तो क्या होता है, या उन वरदानों को स्वयं पर सीमित कर दे, जब कि सब चीजें परमेश्वर की महिमा के निमित्त हैं।

सृजित संसार पर अतुल्य उदारताओं पर नजर डालें। पाप की विनाश लीलाओं के बाद भी, हम अभी तक इसमें भलाई की प्रकृति को इतना अधिक देख सकते हैं। सृजित संसार अपनी भलाई में इसके बनाने वाले की भलाई के विषय में हमें क्या बतलाता है?

सोमवार **जनवरी 15**

परमेश्वर का पुत्र/मनुष्य का पुत्र

मसीहियों के तौर पर हम विश्वास करते हैं कि यीशु पूर्णरूपेण परमेश्वर था और पूर्णरूपेण मानव था। ईश्वरीय और मानवता का यह मिलन उसके दृष्टि कोण को अद्‌भुत बना देता है जो संसार के लिये महत्त्वपूर्ण है और अनंत काल के लिये महत्त्वपूर्ण है। वह हम समझ नहीं सकते कैसे उसके ईश्वरीय और मानव स्वभाव इस सत्य को प्रभावहीन नहीं कर सकता बजाय किसी की वायुगतिकीय समझ की कमी के कारण जो यह कहे कि वायुयान नहीं उड़ सकते।

"यहाँ पर एक की कीमत के लिये दो भेद हैं - परमेश्वर की एकता के भीतर यीशु की देह में पुरुषत्व और ईश्वर की एकता.... परिकल्पना में कुछ इतना शानदार नहीं हैं जितना इस अवतार की सच्चाई में है।" -जे०आई० पैकर, नॉविंग गोड, पेज 53।

यीशु के इस पृथ्वी में आने का एक कारण हमें यह दिखाना था कि परमेश्वर कितना प्रेमी और परवाह करने वाला है और हममें से प्रत्येक के लिये कितनी फिक्र करता है। किसी शांत और उदासीन देवता होने से दूर, जैसा कुछ का विश्वास है, यीशु ने हमारे स्वर्गीय पिता के सच्चे चरित्र को उजागर किया।

यद्यपि शैतान ने मनुष्यों को परमेश्वर से अलग करने की कोशिश की है। उसने उसे व्यक्तिगत विहीन करने की कोशिश की है, उसे चरित्रित करते हुए कि वह हमारी परवाह नहीं करता। परमेश्वर की दयालुता और अनुग्रह की वास्तविकता को जानने और अनुभव करने से हमें दूर रखने के लिये वह हर संभव चीजों को करता है। भौतिक चीजों के प्रति अत्यधिक प्रेम, इस छोर को प्राप्त करने के शैतान की चालों में एक के तौर पर बेहतर कार्य करता है।

पढ़ें मत्ती 19: 16-22। यह कहानी हमें क्या बतलाती है कि किस प्रकार शैतान हमें परमेश्वर से दूर रखने के लिये भौतिक चीजों के प्रति हमारे प्रेम का इस्तेमाल करता है?

कल्पना करें यीशु स्वयं, परमेश्वर मानव देह में, इस युवा से बात कर रहा था जो स्पष्ट रूप से जानता था, यीशु कोई खास था। और फिर भी क्या हुआ? उसने अपने प्रचुर धन को, भौतिक वस्तुओं के अपने प्रेम को स्वयं परमेश्वर से खुद को अलग करने के लिये प्रयोजित किया। संसार का प्रेम और भौतिक वस्तुओं के प्रेम ने उसे इतना अंधा कर दिया था कि वह हताश होने के बावजूद भी उसका हताशापन काफी नहीं था कि वह अच्छाई करना चाहे। वह अपनी संपत्ति को खो दे रहा था इसलिये हताश नहीं था। वह इसलिये हताश था क्योंकि वह इन चीजों पर अपनी आत्मा को खो दे रहा था।

हम धनी हों या गरीब, हम कैसे आश्वस्त हो सकते हैं कि इस संसार की वस्तुओं से हम सही रिश्ता कायम कर सकते हैं?

मंगलवार **जनवरी 16**

मसीह, उद्धारकर्ता

कर्ज स्वर्ग का सिद्धान्त नहीं है। परन्तु आदम और हवा ने पाप किया, और तोड़ी गई व्यवस्था का अर्थ मृत्यु थी। इस प्रकार मानवता ईश्वरीय न्याय का कर्जदार बना। हम दिवालिया हो गये, आत्मिक रूप से एक ऋण से दिवालिया हो गये जिसे हम कभी भरपाई नहीं कर सकते थे।

हमारे लिये परमेश्वर के प्रेम ने उद्धार की योजना को चलाया। यीशु हमारा "जमानती" बना (इब्रा० 7: 22)। उद्धारकर्ता के तौर पर यह मसीह की पहचान है जो अब तक हुए सबसे महत्त्वपूर्ण लेन-देन को प्रकट करता है। केवल उसका बलिदान ही ईश्वरीय न्याय की मांगी गई कीमत को पूरी कर सकता था। यीशु ने पाप के कर्ज का भुगतान किया जिसका हम क्रूस पर समाविष्ट न्याय और अनुग्रह के आभारी हुए। संसार ने ऐसी सम्पत्ति के प्रदर्शन को कभी नहीं देखा था जो मानवता के उद्धार के लिये चुकायी गयी हो (इफि० 5: 2)।

"स्वर्ग के संपूर्ण खजाने को इस पृथ्वी पर डालकर, मसीह में हमारे लिये पूरे स्वर्ग को देकर परमेश्वर ने प्रत्येक मानवजाति की इच्छा, प्रेम, मन और आत्मा को खरीद लिया है।"–एलेन जी०ह्वाईट, ख्राईस्ट्स ऑबजेक्ट लेसन्स, पेज 326।

प्रत्येक पदस्थल को पढ़ें और सूचीबद्ध करें कि परमेश्वर ने हमें किससे बचाया है: कुलु० 1: 13; 1थिस्सु० 1: 10; 1पत० 1: 18; इब्रा० 2: 14-15; गला० 3: 13; प्रका० 1: 5.

यूहन्ना 19:30 में ग्रीक शब्द टेटेलेस्टाई (tetelestai) अभी तक कहे गये सबसे महत्त्वपूर्ण शब्द कहा गया है। इसका अर्थ है "पूरा हुआ" और यही आखिरी कथन था जिसे यीशु ने क्रूस पर कहा। उसके अंतिम उद्घोषणा का अर्थ था कि उसका मकसद पूरा हुआ और हमारे कर्ज का "पूरा भुगतान" हुआ। उसने न उम्मीद की तरह इस कथन को नहीं कहा वरन खोये हुए संसार के उद्धार में सफलता प्राप्त की। उद्धार के क्रूस को ताकना वर्तमान प्रभाव के साथ एक विगत घटना और भविष्य की उम्मीद को प्रकट करता है। यीशु ने हमेशा के लिये पाप, मत्यु, और शैतान के कामों को नाश करने के लिये अपना जीवन दे दिया। इसका अर्थ यह होता है कि हम नालायक होने पर भी बचाये गये हैं (इफि० 1:7), उद्धार के अचम्भों को देखना पवित्र भूमि पर कदम रखना है।

मसीह उद्धारकर्ता के तौर पर परमेश्वर का सबसे प्रभावशाली चेहरा है। उसकी उच्चतर रुचि हमें छुड़ाना है। यह मानवता के प्रति उसका दृष्टिकोण और खासकर हमारे साथ एक संबंध को वह कैसे मोल देता है, प्रकट करता है। न्याय से संतुष्ट होकर, मसीह अपने बलिदान पर हमारी प्रतिक्रिया को गौर करता है।

इस पर विचार करें: मसीह ने पूरी तरह और भरपूरी से जितने भी पाप आपने अभी तक किये हैं, कर्ज अदा किया। आपका प्रत्युत्तर क्या होना चाहिए? (देखें अय्यूब 42:5-6)।

बुधवार **जनवरी 17**

ईर्ष्यालु परमेश्वर

फिरोन के साथ मुकाबले में परमेश्वर ने घोषणा की, "नहीं तो अब की बार मैं तुझपर, और तेरे कर्मचारियों और तेरी प्रजा पर सब प्रकार की विपत्तियाँ डालूँगा जिससे तू जान ले कि सारी पृथ्वी पर मेरे तुल्य कोई दूसरा नहीं है" (निर्ग० 9:14)।

परमेश्वर का क्या तात्पर्य था जब उसने कहा कि "सारी पृथ्वी पर मेरे तुल्य कोई दूसरा नहीं है"? ईश्वर के कार्यों या चरित्र को पूर्णरूपेण समझना मनुष्यों के सीमित दिमाग के लिये असंभव है। इच्छुक दिमाग के लिये अति शक्तिशाली और उच्च शिक्षित मस्तिष्क के लिये, वह पवित्र जन हमेशा के लिये रहस्य के वस्त्र धारण करेगा।"– एलेन जी० ह्वाईट टेस्टीमोनीज फॉर द चर्च, वॉल्यूम 5, पेज 698,699।

परमेश्वर के समान कोई नहीं (1राजा 8:60) वह सोचता है, याद करता और वैसा कार्य करता है जैसा हम समझ नहीं सकते। कोई बात नहीं, हम कितने प्रयास करें उसे हमारे स्वरूप में लाने के लिये करें, परमेश्वर, वैसा ही रहेगा। वही एक है जिसने प्रत्येक हिमकण, दिमाग, चेहरा और व्यक्तिगत चरित्रिक विशेषता को बनाया और "कोई दूसरा कोई नहीं" (1राजा 8:60) आखिरकार वह सृष्टिकर्ता है, और सृष्टिकर्ता के तौर पर निश्चित रूप से वह अपनी सृष्टि से अलग है।

ये पदस्थल हमें क्या बतलाते हैं कि परमेश्वर अपनी सृष्टि से किस प्रकार भिन्न है? 1शमू० 2:2; भजन 86:8; यशा० 55:8-9; यिर्म० 10:10; तीतुस 1:2.

_____

_____

जब हम सब कुछ देखते हैं कि परमेश्वर है, सब कुछ जिसका वह मालिक है, और वह सब कुछ जिसे वह करता है, यह उल्लेखनीय है कि उसके प्रतियोगी होते। और तौभी वह करता है, इस अर्थ में कि उसे मानव प्रेम और स्नेह के लिये उसे "मुकाबला" करना है। शायद यही वजह है क्यों वह कहता है कि वह "ईर्ष्यालु" परमेश्वर है (निर्ग० 34:14)। परमेश्वर ने मनुष्यों को स्वतंत्र सृजा, जिसका यह तात्पर्य है कि हमारे पास विकल्प है उसकी सेवा करें या किसी अन्य की। विविध तरीके से वह मानव की मूलभूत समस्या रही है: दूसरे देवताओं की सेवा के लिये चुनाव करना, परवाह किये बिना कि वे किस रूप में आते हैं, सेवा प्राप्त करने वाले परमेश्वर को नकारते हुए, जिसने संसार को सृजा और समग्र रूप से इसका मालिक है। यही वजह है तब, कि वह सचमुच एक ईर्ष्यालु परमेश्वर है।

आपके स्नेह के लिये आपके जीवन में क्या कुछ है जो परमेवशर से मुकाबला कर रहा है?

बृहस्पतिवार **जनवरी 18**

सच्चा स्वामित्व

हम सृष्टि के द्वारा और उद्धार के द्वारा परमेश्वर के हैं। केवल हम परमेश्वर के नहीं वरन हमारी सारी कायनात उसी की है। हम स्वयं किसी चीज के मालिक नहीं होते, बजाय हमारे स्वयं के चुनावों के।

इसके विपरीत, सांसारिकता का एक केंद्रीय सिद्धांत का विचार है कि हम हमारी सम्पत्तियों के मालिक हैं। तथापि यह धोखा है। मसीहियों के लिये सोचना वे अपनी सम्पत्तियों के अंतिम मालिक हैं यह सोचना कुछ विपरीतार्थ है जो परमेश्वर का वचन सिखलाता है।

परमेश्वर के वश में हमें छोड़ सब कुछ है (अय्यूब 38:4-11)। हम केवल पराये और किरायेदार हैं (लैव्य० 25:23), जिस प्रकार इस्राएली प्रतिज्ञा की हुई भूमि (देश) पर थे। इतना तक कि हम अगली श्वास के लिये परमेश्वर पर निर्भर हैं (प्रेरित 17:25)। जो हम सोचते हैं, हमारा है, उसका है। हम उसके भण्डारी हैं, हमें मूर्त और अमूर्त चीजों से परमेश्वर की महिमा करनी है।

अग्रांकित पदस्थलों से चीजों की सूची बनायें जो परमेश्वर के स्वामित्व में है: व्य०वि० 10:14; भजन० 50:10; 104:16; यहेज० 18:4; हग्गै 2:8; 1कुरिन्थ० 6:19-20। ये अवतरण हमें क्या बतलाते हैं कि हमें भौतिक चीजों को किस नजरिए से देखना है जो हमारे स्वामित्व में हैं?

_____

_____

"सब चीजें परमेश्वर की हैं। मनुष्य उसके दावों को नजरांदाज कर सकता है। जबकि वह बहुतायत से अपनी आशीषों को उन पर डालता है, वे उसके वरदानों को अपने आनन्द के लिये इस्तेमाल कर सकते हैं; परन्तु उन्हें अपने भण्डारीपन के लिये जवाब देने हेतु बुलाया जाएगा।"– एलेन जी०ह्वाईट, टेस्टीमोनीज फॉर द चर्च, वॉल्यूम 9, पेज 246.

परमेश्वर का स्वामित्व और हमारा भण्डारीपन एक संबंध को अनिवार्य बनाता है, जिसके मार्फत वह हमें उस तरीके से व्यवहार करता है जो हमें स्वर्ग के लिये तैयार करेगा और वह दूसरों को लाभान्वित एवं आशीषित करेगा। परन्तु अविश्वासी भण्डारी स्वामी की अपनी ही संपत्तियों तक पहुँच पर रोक लगाता है। जैसा हमने कल देखा, परमेश्वर अपनी इच्छा हम पर नहीं थोपता। उसने हमें सृजा, और इस संसार में हमें सम्पत्ति दी कि उसके आने तक हम इसे व्यवस्थित रखें। हम उनके साथ क्या करते हैं, हमारा उसके साथ संबंध में परिलक्षित होता है।

पूर्णरूपेण विचार करें कि इसका क्या अर्थ है, वास्तव में आप किसी चीज के मालिक नहीं जो आपके पास हैं परन्तु वे परमेश्वर के हैं। वह आपको क्या बतलाना चाहिए कि आपके स्वामित्व में जो सम्पत्ति हैं उससे आपको कैसे संबद्ध होना चाहिए?

शुक्रवार **जनवरी 19**

अतिरिक्त अध्ययन: "भण्डारीपन, जैसा हम समझते हैं, आदम और हवा को सुन्दर उद्यान घर में रखने के द्वारा परमेश्वर के साथ शुरू हुआ ताकि वे इसकी देख-भाल एवं व्यवस्थित करें (उत्प० 2:15)। इस सिद्ध वातावरण को उन्हें उद्यान को रहने लायक बनाना था, एक कार्य जो इतना कठिन नहीं था। परमेश्वर ने उन्हें एक नयी भूमिका के लिये अधिकृत

किया और उन्हें उनकी जिम्मेदारी सिखाई। अदन की देख-भाल उन्हें अर्थ देता और नये परिवार में खुशी लाता।

इब्रानी शब्द "प्रभुत्व" (उत्प० 1:26, 28) का अर्थ "नियंत्रण में लाना और शासन करना है।" जैसा संदर्भ में दिया गया है, यह कठोर प्रभुत्व नहीं था परन्तु परमेश्वर की सृष्टि के लिये परवाह में एक उदार शासन था। यह जिम्मेदारी रुकी नहीं है। इस वातावरण में आदम और हवा को सीखना था कि परमेश्वर स्वामी है, और वे उसके प्रबंधक, या भण्डारी। शुरू से परमेश्वर की इच्छा रही थी कि आदम और हवा का जिम्मेदारी और भरोसे का पद है परन्तु मालिक के तौर पर नहीं। उन्हें परमेश्वर को बताना था कि वे अपने कामों के प्रति विश्वस्त हैं।

"आदम और हवा को अदन की वाटिका देख-भाल के लिये दी गई थी। उन्हें इसे छांटना और देख-भाल करना था। वे अपने काम के प्रति खुश थे। मन, हृदय, और इच्छा पूर्ण सामंजस्य के साथ कार्य करते थे। अपने परिश्रम में उन्होंने कोई थकान और मुश्किल नहीं पाई। उनका समय उपयोगी कार्य और एक दूसरे के साथ सहभागिता से भरा हुआ था। उनका पेशा आनन्ददायक था। परमेश्वर और मसीह उनके पास आते और उनसे बातें करते थे। उन्हें पूर्ण आजादी दी गई थी....परमेश्वर उनके अदन के घर का मालिक था। उसके अधीन ये इसके अधिकारी थे।"- एलेन जी० ह्वाईट, मैन्यूस्क्रिप्ट रिलीजेस, वॉल्यूम 10, पेज 327.

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न :

1. हमारी मूल जिम्मेदारी के विषय वह तथ्य कि परमेश्वर इस संसार का मालिक है हमें क्या सिखलाता है जब यह वातावरण पर आता है? जब हमें कुछ वातावरणविदों की राजनीतिक कट्टरपन से बचना है जो सब पर स्वयं सृष्टि की उपासना करते हैं, मसीहियों के तौर पर वातावरण की देख-भाल की ओर हमारा नजरिया कैसा होना चाहिए?
2. "ईर्ष्यालु" परमेश्वर के तौर पर परमेश्वर के विचार पर चिंतन करें। यह हमेशा पकड़ने के लिये एक सहज अवधारणा नहीं है, खासकर क्योंकि मनुष्य की शब्दावली में हम ईर्ष्यालु को कुछ बुराई के तौर पर देखते हैं, ऐसा कुछ जिसे टाला जाना चाहिए। यद्यपि हम इस विचार को समझ सकते हैं जैसा कि यह बिना किसी नकारात्मक सामान के जो संसार सामान्यत: ढोता है परमेश्वर पर लागू होता है?
3. हम भौतिक चीजों के उपयुक्त व्यवहार और आनन्द के बीच फर्क करना कैसे सीख सकते हैं जिसे परमेश्वर ने सृजा है और उन चीजों का दुरुपयोग यह फर्क करना क्यों इतना महत्त्वपूर्ण है?